त्रैमासिक ई - पत्रिका

मार्च 2023

खंड 1 अंक 1

हिंदी विभाग

प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल, अबु धाबी

© सर्वाधिकार सुरक्षित

ई-मेल : editor.pratyush@bhavansabudhabi.com

संपर्क क्रमांक : +971 25591777

प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल, अबु धाबी

विद्यालय वेब पता :https://bhavansabudhabi.com/

नोट : इस पत्रिका का किसी भी रूप में व्यावसायिक दृष्टिकोण नहीं है।

इस पत्रिका में समाहित सामग्री का उद्देश्य विद्यार्थियों का प्रोत्साहन ही एकमात्र उद्देश्य है।

आपके लेख, कविता, कहानी, यात्रा वृतांत आदि पत्रिका में शामिल करने हेतु ईमेल करें - editor.pratyush@bhavansabudhabi.com

प्रत्यूष
एक नई सुबह

संपादन मण्डल

प्रधान संपादक
आयुष बिसोई

सहायक संपादक
साकिब मंज़र

संपादन सदस्य
रुमेसा शेख
हेतवी पटेल
हेत कथ्रेचा
न्यास मेहता
आस्मा शेख

परामर्श मण्डल

रवि शुक्ला
इंदु
हेमलता गौड़
मुईनुद्दीन हाश्मी
डॉ गीता भट्ट
राजी के. एम.
मंजू मैथ्यू
डिम्पी डागर
नुसरत फातिमा

क्रम

संपादक की कलम से - 1
आशीष वचन
प्रधानाचार्य - 2
उप – प्रधानाचार्या - 3
विभाग प्रमुख - 4
विद्यार्थी पन्ना - 6
नन्हें चित्रकार - 15
अनुभव वाणी - 18
गुरूपदेश - 23
गतिविधियों में हम - 27
उपलब्धियाँ - 37
हिंदी साहित्यकार - 39
सामान्य ज्ञान - 41
हिंदी में प्रथम - 42
आपकी परख - 43
सेल्फ़ी कोना - 44
लिखो और जीतो - 45

प्रिय पाठक,
अभिवादन !

मैं गर्व के साथ आपको 'प्रत्यूष - एक नई सुबह' त्रैमासिक पत्रिका का पहला संस्करण प्रस्तुत कर रहा हूँ। एक जिम्मेदारी से पूर्ण (प्रधान संपादक) की भूमिका निभाने का यह सुअवसर पाकर मैं गौरवान्वित और सम्मानित महसूस कर रहा हूँ।

'प्रत्यूष' हिंदी विभाग के विद्यार्थियों की अपनी कृति है। इसमें साथी विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा साझा किए गए विचार शामिल हैं। इसमें हमारे नौनिहालों की शानदार कलाकृतियाँ और विभाग द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ भी शामिल हैं। जिसका उद्देश्य है कि आप विभाग के साथ सतत जुड़कर रहें और नई ऊर्जा को सदैव प्रेरित करते रहें। पत्रिका का नाम 'प्रत्यूष - एक नई सुबह' का अर्थ है सूर्योदय या भोर। संपादन मण्डल द्वारा इस नाम को चुनने के पीछे का आशय बहुत स्पष्ट है कि कल की सुबह युवाओं का प्रतिनिधित्व करेगी। युवा ऊर्जा को नई उम्मीद और चमक प्रदान कर हर स्थिति का सामना करने का सामर्थ्य प्रदान करेगी। इस पत्रिका में शामिल विचार सूर्योदय की तरह ही अज्ञान रूपी अंधकार को अपने में समाहित कर एक नई सुबह प्रदान करेंगे।

मैं कह सकता हूँ कि हमने प्रकाश की आशावादी किरण की ओर देखना और आगे बढ़ना सीख लिया है और इसलिए अपनी रचनात्मकता को घटनाओं, गतिविधियों, उत्साहजनक लेखों, कविताओं, कलाकृतियों और बहुत कुछ के माध्यम से प्रस्तुत करने की कोशिश की है ताकि आप आश्वासित रह सकें कि भावी पीढ़ी जागरूक और जिम्मेदार है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी प्रत्यूष को पढ़ना पसंद करेंगे और आपके विचार हमारे साथ साझा करेंगे।

आपके सकारात्मक विचारों की प्रतीक्षा में !

आयुष बिसोई
प्रधान संपादक

प्रिय हिंदी प्रेमियों,

अभिवादन!

'हिंदी' अन्य भाषाओं की तरह केवल एक भाषा नहीं है, यह एक संस्कृति है। इसलिए किसी भी भाषा को सीखने, प्रोत्साहित करने के लिए जो कुछ भी होता है उसे संस्कृति के सर्वोत्तम गुणों को संरक्षित करने के लिए स्वीकार किया जाता है। हमारी दुनिया विविधता के लिए जानी जाती है। इस विविधता की पवित्रता को बनाए रखने के लिए सभी संस्कृतियों को उनके प्राचीन सौंदर्य में संरक्षित किया जाना चाहिए। मैं विद्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रत्यूष - एक नई सुबह' को आकार देने की सोच, जज़्बे, दृष्टि और सामूहिक कार्य को सलाम करता हूँ। हमारे हिंदी विभाग का यह प्रथम प्रयास मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह समझना होगा कि मूल रूप में सीखना पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं है। इसके व्यापक आयाम और प्रभाव हैं। 'प्रत्यूष' निश्चित रूप से सीखने को उसके आंतरिक रूप में प्रोत्साहित करने के लिए नए द्वार खोलेगा।

सुरेश वी. बालकृष्णन
प्रधानाचार्य

पद्मजा मेनन
उप-प्रधानाचार्या

प्रिय पाठकों,
अभिवादन!

संस्कृत में 'प्रत्यूष' शब्द का अर्थ है 'प्रातः, उषा, प्रभातकालः'। एक नई सुबह हमेशा आशा और ऊर्जा जगाती है। मैं हिंदी विभाग के पहले प्रयास की सराहना करती हूँ। निश्चित रूप से यह प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल, अबु धाबी को नई ऊँचाइयों पर ले जाने में मदद करेगा। इस अद्भुत कार्य के लिए 'टीम प्रत्यूष' को बधाई।

मिनी रमेश
उप-प्रधानाचार्या

प्रिय टीम प्रत्यूष,

हर नई शुरुआत नई आशाओं और आकांक्षाओं को जन्म देती है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, 'प्रत्यूष' छात्रों के लिए उनकी रचनात्मकता को उजागर करने का मार्ग प्रशस्त करता हुआ उन्हें आत्मविश्वासी बनने के लिए सशक्त बनाएगा। इसके अलावा विद्यार्थी काल में इस तरह के कार्य 'लेखों का संग्रह, संपादन, प्रूफरीडिंग और प्रकाशन' विद्यार्थियों को उनके नेतृत्व कौशल में वृद्धि करते हैं। मैं आशा करती हूँ कि 'प्रत्यूष' अपनी सोच और कल्पना की रोशनी से अपने पाठकों को प्रबुद्ध और प्रभावित करेगा।

आपकी सफलता की शुभकामनाओं के साथ बधाई !

आत्मीय पाठकवर्ग,
अभिवादन !

प्राची सारी सृष्टि को अरुणिमा में बोर रही है। श्यामल घासों से नीले गगन तक सभी उस लालिमा को खुद में समा लेना चाहते हैं। सारी सृष्टि जानती है इस लालिमा के पीछे एक सुनहला दिन छिपा हुआ है, जो आलस्य के अंधकार को चीर कर सारी जगती को स्वर्णिम कर देने का सामर्थ्य रखता है। उषा की प्रत्येक किरण प्रमाद की कोठरी में स्फूर्ति की रोशनी पहुँचाने का कार्य करती है। वास्तव में प्रकृति और मानव का भी आपस में एक अभिन्न और अनन्योन्याश्रित संबंध है। मनुष्य का बाल्यकाल भी प्रकृति के सबसे दिव्य वर्तन उषा या सुबह की तरह होता है। जिसमें दिन की तीक्ष्ण और असह्य धूप के स्थान पर शीतोष्ण प्रकृति की मनोहारी किरणें होती है। जिसमें सांझ की मादकता न होकर नवोल्लास होता है। एक के देदीप्यमान होने से प्रकृति का विकास होता है और दूसरे से समाज का। भारतीय लोकमानस में लंबे समय से बच्चों की तुलना घट से तथा गुरु, परिवार या समाज की तुलना कुम्हार से की गई है। सही मायनों में यह तुलना बिलकुल सटीक है। बाल्यकाल ही वह अवस्था होती है जब बच्चे का मानस सही मार्ग पर लग कर उन्नति का या गलत दिशा में बढ़ कर विनाश का कारण बन सकता है। सर्जना का बीज हर व्यक्ति के भीतर प्रकृति द्वारा प्रदत्त मिलता है। आवश्यकता है तो केवल उसे भूमि मिलने की और यह बात बिना किसी शंका के कही जा सकती है कि जिस पादप को सही खाद पानी मिल जाए उसका विकास होते देर नहीं लगती। 'प्रत्यूष - एक नई सुबह' पत्रिका सृजन के उसी बीज को सही वातावरण देने का एक प्रयास है। सृजन किसी भी क्षेत्र में हो सकता है किंतु मनुष्य सर्वप्रथम ध्वनि का सृजन करता है। फिर वही ध्वनि वाणी बनती है और वाणी की शाब्दिक अभिव्यक्ति ही भाषा है। इस भाषा का विन्यास ही तो कला है। इसी विन्यास में ही रचनात्मकता अभिव्यक्त होती है। यही विन्यास ही वर्षों से असंख्य व्यक्तियों द्वारा असंख्य भाषाओं में होता रहा है परंतु सब मौलिक। इसी मौलिकता और रचनात्मकता को बरकरार रखते हुए अनंत काल से साहित्य सृजन होता रहा है। साहित्य का सृजन कभी व्यर्थ ही नहीं हुआ अपितु यह सदैव सोद्देश्य होता रहा है। कभी इसका उद्देश्य मनोरंजन,कभी धनार्जन तो कभी समाज सुधार रहा है। इतिहास साक्षी रहा है कि जब-जब समाज एवं संस्कृति पतनोन्मुख हुई है तब उसे साहित्य ने ही संभाला है। विशेष तौर पर जब हम भारतीय साहित्य की बात करते हैं तो वह हमेशा अपनी संस्कृति का अपने समाज का पोषक रहा है, इसी पोषकता को बढ़ाने हेतु यह पत्रिका आपके बीच है। इसका संपादन उन विद्यार्थियों द्वारा किया जा रहा है जो ऐसे नवांकुर है जिनमें कोई दोष नहीं है, कोई पाप नहीं है। उनकी सारी अभिव्यक्ति सौंदर्य की अभिव्यक्ति है। लेखन निश्चित रूप से भावों की अभिव्यक्ति है किंतु इसके साथ यह मन-बुद्धि पर असर डालने वाली एक चिंतन प्रक्रिया का विकास भी है। जो व्यक्ति के मनोमस्तिष्क पर एक अलग तरीके से प्रभाव डालता है। 'प्रत्यूष – एक नई सुबह' विद्यार्थी जीवन की प्रयोगशाला का वह सफल परीक्षण है जिसके दूरगामी परिणाम इनसे जुड़े व्यक्तित्वों के जीवन में अवश्य दिखाई देंगे।
इसकी कल्पना, रचना, और संपादन हेतु हृदय से बधाई !!

रवि शुक्ला
विभाग प्रमुख

प्रिय विद्यार्थियों,
अभिवादन !

विद्यार्थी जीवन शिक्षा की दृष्टि से व्यक्ति के जीवन का स्वर्ण काल होता है और इस स्वर्ण काल में प्रत्येक विद्यार्थी उपजाऊ भूमि पर लहलहाती फसल के समान होते हैं, जिस पर प्रत्येक देश और समाज की आधारशिला निर्मित होती है। विद्यार्थी राष्ट्र के भविष्य निर्माता होते हैं तथा देश के विकासरथ को तीव्र गति से आगे बढ़ाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल , अबुधाबी छात्रों के जीवन के विभिन्न चरणों के महत्त्व से परिचित है, इसलिए विभिन्न गतिविधियों द्वारा बच्चों की अंतरनिहित प्रतिभाओं की पहचान करने के बाद उन्हें उज्ज्वल भविष्य के लिए पर्याप्त जीवन कौशल प्रदान करता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हिंदी विभाग शिक्षा को केवल किताबों तक सीमित न रख छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल देता है। अपने देश भारत से दूर खाड़ी देशों में रहने के बावजूद भी विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बनाए रखने के लिए विभाग द्वारा विद्यार्थियों के लिए समय-समय पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। जिनके माध्यम से छात्र केवल हिंदी भाषा ही नहीं बल्कि देश की संस्कृति व परंपरा से जुड़े रहते हैं।

विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने के उद्देश्य से हिंदी विभाग ने सत्र 2022-2023 में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित त्रैमासिक पत्रिका 'प्रत्यूष - एक नई सुबह ' की रचना करने का निर्णय लिया है। इस पत्रिका के माध्यम से छात्रों को अपने लेख, कहानी, यात्रा वृतांत, चुटकुले तथा अन्य रचनात्मकताओं आदि को प्रकाशित करने का अवसर प्रदान किया जा रहा है। इस पत्रिका से आप जानेंगे कि विद्यालय की गतिविधियों के साथ-साथ विभाग की गतिविधियों को भी योजनाबद्ध तरीके से तैयार किया जाता है तथा पाठ्यक्रम और गतिविधियों को समान महत्त्व दिया जाता है। विद्यालय पूरी तरह से सभी सुविधाओं और उत्कृष्ट बुनियादी ढांचे से सुसज्जित है, जो सुचारु शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के लिए एक आदर्श और सुरक्षित वातावरण प्रदान करता है। इसका एक साकार उदाहरण 'प्रत्यूष' के रूप में देखा जा सकता है।

इसके संपादन और उत्कृष्ट कार्य हेतु हार्दिक बधाई !

इंदु
विभाग प्रमुख (प्राथमिक)

विद्यार्थी वाणी

प्रकृति और हम

- सुजीत शरणार्थी

धरती पर जीवन जीने के लिए भगवान से हमें बहुमूल्य और कीमती उपहार के रुप में प्रकृति मिली है। दैनिक जीवन के लिए उपलब्ध सभी संसाधनों के द्वारा प्रकृति हमारे जीवन को आसान बना देती है। एक माँ की तरह हमारा लालन-पालन, मदद और ध्यान देने के लिए हमें अपनी प्रकृति का धन्यवाद करना चाहिए।

अगर हम सुबह के समय शांति से बगीचे में बैठें तो हम प्रकृति की मीठी आवाज़ और खूबसूरती का आनंद ले सकते हैं। हमारी कुदरत ढेर सारी प्राकृतिक सुंदरता से सुशोभित है, जिसका हम किसी भी समय रस ले सकते हैं। पृथ्वी के पास भौगोलिक सुंदरता है और इसे स्वर्ग या शहरों का सुंदर बगीचा भी कहा जाता है। लेकिन ये दुख की बात है कि भगवान के द्वारा इंसानों को दिए गए इस सुंदर उपहार में बढ़ती तकनीकी उन्नति और मानवजाति के अज्ञानता की वजह से लगातार पतन हो रहा है।

प्रकृति हमारी वास्तविक माँ की तरह होती है। जो हमें कभी नुकसान नहीं पहुँचाती बल्कि हमारा पालन-पोषण करती है। सुबह प्रकृति की गोद में टहलने से हम स्वस्थ और मज़बूत बनते हैं। साथ ही ये हमें कई सारी घातक बीमारियों जैसे डायबिटीज, हृदयाघात, उच्च रक्तचाप, लीवर संबंधी परेशानी, पाचन संबंधी समस्या, संक्रमण, दिमागी समस्याओं आदि से भी दूर रखता है।

ये हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा है कि हम चिड़ियों की मधुर आवाज़, मंद व ताज़ी हवा की सरसराहट, बहती नदी की आवाज़ आदि सुबह – सुबह सुनें। ज्यादातर कवि, लेखक और लोगों को अपने दिमाग, शरीर, और आत्मा को दुबारा से ऊर्जायुक्त बनाने के लिए उद्यानों में योग और ध्यान करते देखा जा सकता है।

महिला सशक्तिकरण

– अस्मी देशमुख

महिलाएँ धन और शक्ति का प्रतीक होती हैं। वे समाज और परिवार में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे एक ही समय में माँ, शिक्षक, नर्स, रसोइया, दोस्त सभी की भूमिका निभाती हैं। नौकरी पेशा कई महिलाओं को भी अपनी नौकरी और परिवार को एकसाथ चलाना पड़ता है। स्त्री का जीवन कितना कठिन होता है, फिर भी उसे समाज में कम या न के बराबर मान्यता मिलती है। कई अत्यंत प्रतिभाशाली महिलाओं की समाज में कुछ या कुछ भी मान्यता नहीं है। महिलाओं की उन्नति और विकास में प्रमुख बाधाओं में से एक असमानता है। कई जगहों पर महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझा जाता है।

कई माता-पिता चाहते हैं कि उनका बेटा शिक्षा प्राप्त करे, लेकिन वे अपनी बेटी के लिए ऐसा नहीं चाहते। जैसा कि ज़्यादातर महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है, उन्हें कोई नौकरी नहीं मिलती है या कम वेतन वाली नौकरी मिलती है। इसलिए परिवार में सबसे अधिक कमाने वाला व्यक्ति पुरुष ही रहता है और महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता नहीं मिल पाती है। जैसे-जैसे समाज बढ़ रहा है, लड़कियों को स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह प्रोत्साहन एक साकार रूप लेकर नए समाज का निर्माण कर रहा है। अतः हमें मिलकर इस सशक्त समाज में महिला और पुरुष दोनों की ही समान भागीदारी को सुनिश्चित करना होगा। कारण इतिहास गवाह है कि जब भी महिलाओं को मौका मिला है उन्होंने उसे आकार देकर साकार किया है।

दोस्ती

– सैयदा उज़मा

'दोस्ती' भी क्या गज़ब की चीज़ होती है,
दोस्ती हर चेहरे की मीठी मुस्कान होती है।
दोस्ती हर सुख-दुख की पहचान होती है,
मगर ऐसी दोस्ती बस नसीब वालों को ही नसीब होती है।

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस

– साकिब मंज़र

बुद्धि से संपन्न निर्जीव वस्तुओं की अवधारणा बहुत सारी प्राचीन संस्कृतियों में पाई गई है। ग्रीक और मिस्र(एज्यिप्शयन) जैसे आधुनिक सभ्यताओं में भी इन विषय पर विचार खोजे जा सकते हैं। इन्हीं विचारों और प्रक्रियाओं की नींव पर आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस अर्थात कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संकल्पना अस्तित्व में आई। 'आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस' शब्द का निर्माण अमेरिकी संगणक वैज्ञानिक, जॉन मेक-कारथी द्वारा 31 अगस्त, 1955 में किया गया था। इस दिन को आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का जन्मदिन भी माना जाता है। तब और आज के आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस में बहुत अंतर देखे जा सकते हैं।

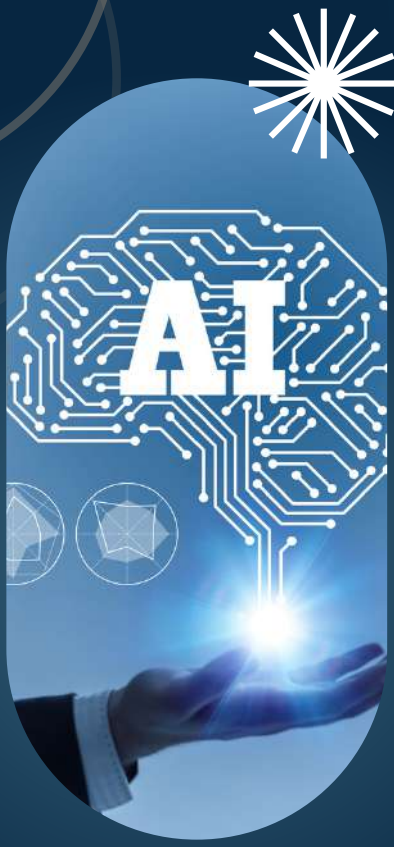

'आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस' शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रकारों के कंप्यूटर मशीनों और विचारों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, परंतु सरल शब्दों में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस शब्द मशीनों की मानव जैसी बुद्धि की पुनरुत्पादन करने की क्षमता तथा उस बुद्धि का प्रयोग कर जटिल व मिश्रित समस्याओं के हल निकालने की प्रक्रिया को प्रकट करता है।

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का हमारी आज की दुनिया में कई क्षेत्रों के भीतर उपयोग किया जाता है। सरल गणित से लेकर अपने-आप चलने वाली गाड़ियाँ, आदि अधिकाधिक कार्य आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस द्वारा किया जा सकता है। सामान्य तौर पर ए.आई. सिस्टम बड़ी मात्रा में लेबल किए गए प्रशिक्षण डेटा को पढ़ता है, उसका विश्लेषण करता है और उस डेटा के भीतर मौजूद सहसंबंधों को अंकित करता है; इस जानकारी का प्रयोग कर वह अपने सामने प्रस्तुत समस्याओं को हल करता है। ए.आई. प्रोग्रामिंग तीन संज्ञानात्मक कौशल के निर्माण पर केंद्रित रहती है: सीखना, तर्क और आत्म-सुधार।

गरीबी: वर्तमान और भविष्य की समस्या

- कीर्तना नायर

गरीबी क्या है? गरीबी का अर्थ भोजन, वस्त्र और आवास सहित बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन न होना है। हालाँकि, गरीबी पर्याप्त धन न होने से कहीं अधिक है।
विश्व बैंक संगठन गरीबी का वर्णन इस प्रकार करता है:

"गरीबी भूख है। गरीबी आश्रय की कमी है। गरीबी बीमार होने पर डॉक्टर को दिखाने में असक्षम होना है। स्कूल न जा पाना गरीबी है। गरीबी नौकरी का ना होना है।
गरीबी के कई चेहरे हैं, जो जगह-जगह और समय-समय पर बदलते रहते हैं और इसे कई तरह से वर्णित किया गया है।"

गरीबी कम करने के मामले में दुनिया काफ़ी आगे निकल चुकी थीं; 19 वीं शताब्दी से जब दुनिया भर में गरीबी की दर 80% से ऊपर थी, वहीं ये दर 2019 में घटकर 8.4% आ गई थीं। हम 70% गरीबी को प्रभावी ढंग से कम करने में कामयाब हो रहे थे, इसकी दर और भी गिर रही थी, पर अफ़सोस महामारी आने से इसके परिणाम बदल गए। मूलभूत आवश्यकताओं को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते हुए लाखों लोगों को गरीबी की ओर धकेल दिया गया। कंपनियों को भारी नुकसान हो रहा था, इसलिए उन्होंने बड़ी संख्या में लोगों को नौकरी से निकाला। इनमें से कई लोगों की आय का एकमात्र स्रोत काट दिया गया, जिससे वे दरिद्र, और बेघर हो गए। अपनी सामाजिक स्थिति के लिए भेदभाव किए जाने के कारण इन लोगों को कई मनोवैज्ञानिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ा।

गरीबी केवल वर्तमान से संबंधित समस्या नहीं है, यह भविष्य के लिए भी एक समस्या बन सकती है। हमें लगता है कि गरीबी कोई बड़ी समस्या नहीं है क्योंकि हम उसे अपने आसपास नहीं देखते। हमें दिन में तीन बार प्राप्त होता भोजन और सिर के ऊपर छत होने का सदैव ईश्वर के प्रति आभारी होना चाहिए।
आइए, गरीबी कम करने और अधिक विकसित, शिक्षित और स्वस्थ भविष्य बनाने के प्रयत्न में साथ जुड़ते हैं।

मुन्नार की यात्रा

- रिथिन मोहम्मद

मुन्नार केरल के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है। मैंने अपने परिवार के सदस्यों के साथ मलप्पुरम (मल्लपुरम) से 12 बजे अपनी यात्रा शुरू की और 4:30 बजे आदिमाली पहुँचा। हमने निजी बस से यात्रा की। हम जुलाई के दौरान गए थे। जैसा कि मानसून का मौसम था, हमने ठंड और बारिश का साझा अनुभव किया। इस दौरान यहाँ के तापमान में 20 डिग्री सेल्सियस तक का अंतर देखा जा सकता है।

पहली चीज़ जो हमने देखी, चाय की पत्तियों की कटाई थी और हमें हार्वेस्टर के साथ काम करने का अवसर भी मिला। उसके बाद हमने ताज़ी चाय की पत्तियों से बनी चाय का आनंद लिया। फिर हमने अनाकुलम में जंगली हाथी गाँव का दौरा किया। हाथियों के झुंड जंगल में रहते हैं और वे रोज़ाना नदी में पानी पीने और खेलने के लिए जाते हैं। आप उन्हें तब देख सकते हैं जब वे स्वाभाविक रूप से झील में पानी पीने और खेलने के लिए जाते हैं। यदि आप एक हाथी प्रेमी हैं, तो आपको इसे अवश्य देखना चाहिए। हम मुन्नार के ब्लैंकेट होटल में रुके थे।

अगले दिन सुबह इको प्वाइंट घूमने गए। इसे मुन्नार की सबसे रहस्यमयी जगहों में से एक माना जाता है। फिर टॉप स्टेशन गए। यह सबसे भव्य घाटियों का अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करता है। यह फोटोशूट के लिए भी काफ़ी मशहूर है। फिर अट्टुकड जलप्रपात गए। यह दिन के दौरान बहुत व्यस्त रहता है। लोग यहाँ सुबह-सुबह आते हैं और नहा-धोकर चट्टानों पर बैठ जाते हैं, फिर ठंडी हवा का आनंद लेते हैं। लेकिन, जब हम गए तो गर्म मौसम के कारण पानी बहुत कम था। फिर हम वापस मलप्पुरम गए और देर रात घर पहुँचे।

बेटियाँ

- हेतवी पटेल

खुशियों का प्यारा रूप होती हैं बेटियाँ
ईश्वर द्वारा दी गयी सौगात होती हैं बेटियाँ।

काली अँधेरी रात में चमकता चाँद हैं बेटियाँ
राहों में हो काँटे तो फूल बिछाती हैं बेटियाँ।

रोशन करेगा बेटा तो एक ही घर को
दो - दो घर की साख होती हैं बेटियाँ।

बेटियाँ नहीं है बेटों से कुछ कम
हीरा अगर है बेटा तो मोती हैं बेटियाँ।

विधि का है ये विधान, यही है समाज का रिवाज
अपनों को छोड़कर, परायों के घर जाती हैं बेटियाँ।

जीवन और हम

– सैयदा उज़मा

मुश्किलों से तुझे लड़ना है,
जीत को हासिल करना है,
क्या हुआ अगर तू अकेला है,
फिर भी तू मुश्किलों का विजेता है।

सूरज बनकर चमकना है अगर तो,
चाँद बनके रात को जागना है,
अपनी मंज़िल के काँटों को तोड़कर,
लक्ष्य की ओर भागना है।

तू कर सकता है ये विश्वास है,
तेरे अपनों को तुझसे आस है,
मत थक अब मेरे शेर,
मंजिल भी तो अब पास है।

राष्ट्रीय पक्षी : बाज़

– हिति श्री अशोक

संयुक्त अरब अमीरात का राष्ट्रीय पक्षी 'बाज़' है। इसकी चोंच आमतौर पर अन्य पक्षियों की तुलना में पैनी होती है। इसके पंजे बहुत मज़बूत और शक्तिशाली होते हैं, जो आसानी से किसी भी शिकार को पकड़ सकते हैं। बाज अपने घोंसले ऊँचे पेड़ या ऊँची चट्टानों पर बनाते हैं। यह एक मांसाहारी पक्षी है। इसका जीवनकाल लगभग 15 से 20 साल तक का होता है।

एक है कबूतर

- सृष्टि विक्रम

एक है कबूतर
बैठा रहता है मेरी खिड़की पर
नज़र होती है उसकी घर के अंदर
घूरता बैठा रहता है खिड़की के बाहर।

जब फड़-फड़ाता है अपने पर
तब मुझे लगता है बहुत डर
आवाज़ करके खाता है मेरा सिर
पर पापा कहते हैं "मत करो उसकी फिकर"।

दिन भर करता है वो मुझे तंग
एक बार भगाया, शुरू कर ली ये जंग
अभी तो वो रोज़ आता है
मेरे चैन को करने भंग।

चोंच है उसकी छोटी
पर करती शोर बड़ी
पढ़ाई नहीं करने देती
ध्यान मेरा पूरा खींच लेती।

क्या करूँ उसका, सोचती रहती हूँ
खिड़की पर जब बैठे, भगाती रहती हूँ
मम्मा कहती हैं कि उसे कुछ खिला दूँ
पर जी तो करता है कि उसे बस देखती रहूँ।

दुनिया हिल रही है: तुर्की-सीरिया भूकंप

- हृदया राजेश

6 फरवरी 2023 की सुबह की शुरुआत पृथ्वी के हिंसक झटकों के साथ हुई, जब दक्षिणी और मध्य तुर्की के साथ-साथ उत्तरी और पश्चिमी सीरिया में 7.8 तीव्रता का भूकंप आया। एक सेकंड के भीतर, इमारतें ढह गईं, जिससे हजारों लोग मलबे में फंस गए। अगले कुछ दिन घबराहट और भय की लहरें थीं। 1,09,000 से अधिक घायलों के साथ 38,000 से अधिक लोग मारे गए हैं। लेकिन 128 घंटे से अधिक समय के बाद 2 महीने के बच्चे को बचाए जाने से उम्मीदें फिर से बढ़ गईं।

विभिन्न देशों ने तुर्की और सीरिया में सहायता और बचाव दल भेजे हैं। यह समय के खिलाफ एक दौड़ है और तुर्की ने घोषणा की है कि बचाव अभियान समाप्ति पर है। आइए, ईश्वर से प्रार्थना करें और आशा करें कि उन्हें फिर से उठने की ताकत और शक्ति प्राप्त हो।

जीवन का अर्थ

– मोनिशा चालागुंडला

एक बार एक प्रोफ़ेसर अपनी कक्षा के सामने मेयोनेज़ का एक बड़ा खाली जार लेकर खड़े हो गए। उन्होंने बड़े पत्थरों से जार को ऊपर तक भर दिया और अपने छात्रों से पूछा कि क्या जार भर गया है?

उनके सभी छात्रों ने सहमति व्यक्त की कि जार भरा हुआ है।

फिर उन्होंने जार में छोटे-छोटे कंकड़ डाले और जार को थोड़ा हिलाया ताकि कंकड़ बड़ी चट्टानों के बीच खुद को बिखेर सकें। उन्होंने फिर पूछा, "क्या अब जार भर गया है?"

छात्र सहमत थे कि जार अभी भी भरा हुआ है। फिर प्रोफेसर ने बची हुई खाली जगह को भरने के लिए जार में रेत डाली। छात्र फिर से सहमत हुए कि जार भरा हुआ है।

इस कहानी में 'जार' आपके जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। पत्थर आपके जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ें हैं जो आपके जीवन को अर्थ देती हैं। कंकड़ और रेत जीवन में कम महत्त्वपूर्ण चीज़ों को संदर्भित करते हैं, हालांकि आपसे छीन लिए जाते हैं, लेकिन आपके जीवन के उद्देश्य और अर्थ को नहीं छीन सकते। कहानी की सीख है कि यदि आप जार में रेत डालना शुरू करते हैं, तो आपके पास पत्थर रूपी मूल जीवन के लिए जगह नहीं होगी।

भालू

– हाजरा फातिमा

'भालू' मतलबी या दुर्भावनापूर्ण नहीं होते हैं; वे बहुत ही कोमल और सहनशील जानवर हैं। एक भालू एक शेर के खिलाफ लड़ाई जीत सकता है। भालुओं की आठ प्रजातियाँ हैं। ग्रिजली और ध्रुवीय भालू सबसे खतरनाक हैं। भालू 25 साल तक जीवित रह सकते हैं।

भालू उत्तरी अमेरिका के सबसे बुद्धिमान स्थलीय जानवरों में से एक है। भालू की अच्छी दृष्टि, उत्कृष्ट सुनने की क्षमता और गंध की बहुत गहरी समझ होती है। भालू शक्ति, साहस और स्वास्थ्य का प्रतिनिधित्व करता है।

नन्हें चित्रकार

आरुष सुनील कुमार

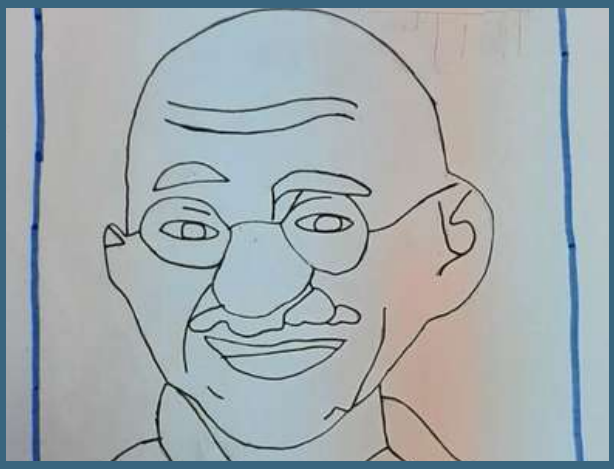

अमरीन निशार

इरा वर्मा

जेरोम जॉर्ज

अनोखी बिसोई

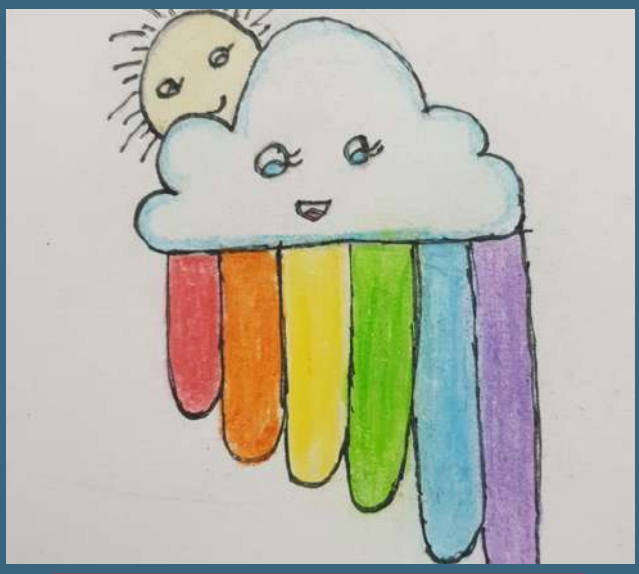

जेसिका जॉन रोज

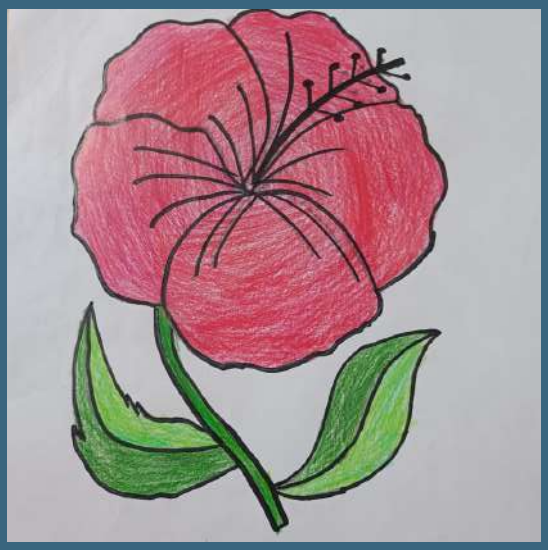

इरा वर्मा

हृदयांश ठाकुर

सामूहिक कार्य

अवन्तिका

सलोनी पाटिल

जेसिका जॉन रोज

अनुभव वाणी

कर्मयोग

– श्वेता भट्ट

मनुष्य का जो कर्तव्य कर्म है वही उसका धर्म है। कर्तव्य कर्म वही है जो शास्त्रों की आज्ञानुसार हो, जिसे करने में मनुष्य समर्थ हो और जिसमें दूसरे का हित हो। मनुष्य जिस परिस्थिति में है उसी के अनुसार उसका कर्तव्य कर्म निश्चित होता है। कर्तव्य कर्म निष्काम भाव से ही करना चाहिए। उसमें किसी भी प्रकार के फल की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। कर्मफल के रूप में सिद्धि मिले या असिद्धि, जय हो या पराजय, लाभ हो या हानि इन सब बातों की परवाह किए बिना मनुष्य को पूरी तत्परता से अपना कर्तव्य कर्म करना चाहिए। इसे ही कर्म योग कहते हैं। कर्म फल के अलावा कर्म योगी अनुकूल – प्रतिकूल, प्रिय - अप्रिय उन सारे कर्मों में भेद नहीं करता और सारे कर्तव्य कर्मों को अच्छी तरह से करता है। अतः कर्मयोगी कर्म और कर्मफल से आसक्त नहीं होता। एक विद्यार्थी भी कर्मयोगी बन सकता है। विद्यार्थी को अपने सारे प्रिय – अप्रिय कर्तव्यकर्म पूरी निष्ठा से करना चाहिए। अच्छी शिक्षा की प्राप्ति के लिए पूरी क्षमता से परिश्रम करना ही विद्यार्थी का कर्तव्य कर्म है। हालांकि आज का सोशल मीडिया युग विद्यार्थियों को बड़ी चुनौती देता है, पर इसको पार करना ही विद्यार्थियों का कर्तव्य है।

अपना कर्तव्य कर्म करते हुए भी विद्यार्थी को कर्मफल से अत्यधिक आसक्त नहीं होना चाहिए। आज के स्पर्धात्मक परीक्षाओं के दौर में असफल होने पर विद्यार्थी अत्यधिक निराश और हतोत्साहित हो जाते हैं। केवल एक परीक्षा के परिणाम को बहुत अधिक महत्त्व दे देते हैं और नासमझी में आत्महत्या तक के कदम उठा लेते हैं। लेकिन उन्हें कर्मफल को इतना महत्त्व नहीं देना चाहिए और पूरी लगन से प्राप्त परिस्थिति के अनुसार उस समय अपने नए कर्तव्य कर्म में लग जाना चाहिए। इस प्रकार कर्मयोगी विद्यार्थी भौतिक सुख तथा मानसिक शांति को प्राप्त करते हुए सही मायने में सफल बनता है।

सकारात्मक मन और निरोगी शरीर

–डॉ राहुल देशमुख

आज के छात्रों के लिए सबसे आवश्यक है 'सकारात्मक मन' और 'निरोगी शरीर'। पढ़ाई तो जरूरी है, पर उसके साथ सकारात्मकता और अच्छा निरोगी शरीर भी अत्यावश्यक है।
सकारात्मक मन का अभिप्राय है कि सभी छात्रों को उनकी पढ़ाई, जीवन, खेल, परिवार और मित्रों के प्रति अच्छा, सकारात्मक विचार रखना चाहिए। सकारात्मकता उन्हें प्रबल और साहसी बना सकती है। शिक्षक और माता – पिता द्वारा भी उन्हें सकारात्मक रहना सिखाना चाहिए। इससे उनका मनोबल बढ़ता है और वह पढ़ाई में और आगे जा सकते हैं। यह उन्हें पढ़ाई, खेल और जीवन में कामयाबी और अच्छा नज़रिया सिखाता है। अगर कहीं उन्हें असफलता का सामना करना पड़ा, तो वह उसका अच्छे से सामना करते हुए सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

निरोगी शरीर के लिए जल्दी उठना और जल्दी सोना जरूरी है। समय पर खाना, कसरत करना या फिर रोज़ खेलना जरूरी है। आज की बैठी जीवन शैली छात्रों को खराब कर रही है। आज आधुनिक उपकरणों का उपयोग कम से कम करना जरूरी है। हरी सब्जी, फल खाना जरूरी है। परिवार और शिक्षकों द्वारा भी छात्रों को इन सभी बातों में उचित मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।
आज की पीढ़ी ही हमारा भविष्य है। इसको निरोगी और सकारात्मक बनाना हमारा कर्तव्य है। शिक्षक और पालक इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसलिए छात्रों को हँसता और खेलता हुआ रखें।

समय के साथ-साथ बच्चों में बदलाव

- श्वेता मेहता

आज हम पुराने बच्चों की दिनचर्या और आज के बच्चों की दिनचर्या के बारे में बात करते हैं। पुराने समय में बच्चे पाठशाला से आने के बाद बाहर खेलने जाते थे, अपनी उम्र के बच्चों के साथ मिलकर अलग - अलग प्रकार के खेल खेलते थे, शारीरिक मेहनत करते थे, पसीना बहाते थे। हर तरह के मौसमी फल और सब्जी, घर का बना मक्खन, दूध आदि खाते थे और तंदुरुस्त रहते थे, बीमार भी कम पड़ते थे। उनका शारीरिक और मानसिक विकास अच्छे से होता था।

लेकिन आज के समय में बच्चे बाहर खेलने नहीं जाते, पसीना नहीं बहाते, घर पर ही बैठकर वीडियो गेम, टेलीविज़न और मोबाइल देखते रहते हैं। शारीरिक कसरत नहीं करते। खाने में भी जंक फूड - पीज़ा, बर्गर, तला हुआ आदि खाते हैं, इसलिए बार - बार बीमार पड़ते हैं, मोटे हो जाते हैं, आँखों पर चश्मे आ आते हैं, इसलिए पहले की दिनचर्या ज्यादा बेहतर थी।

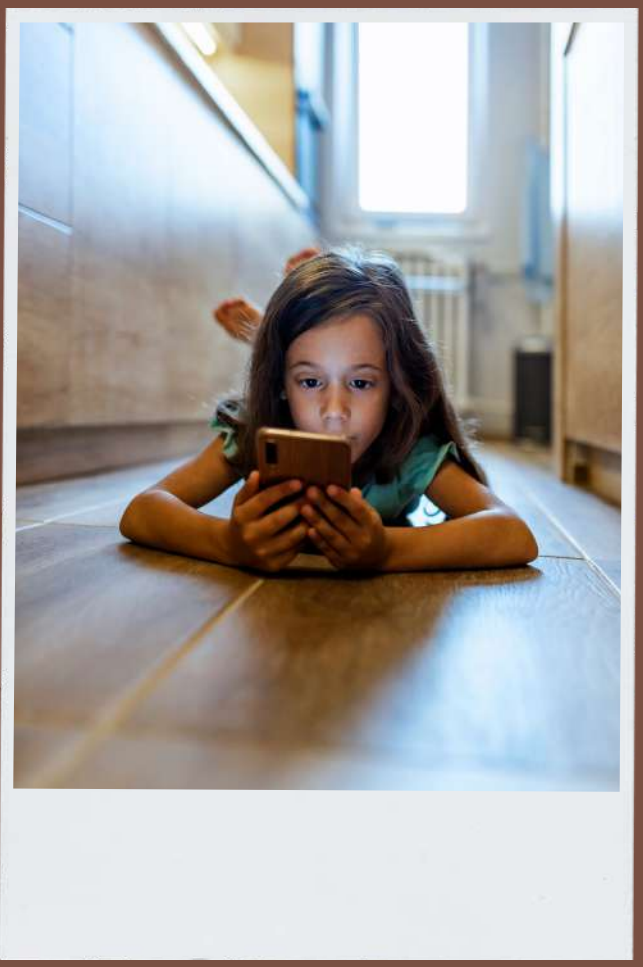

साल के पत्ते

- नेहा भूरट

पहले जब हम छोटे थे तब घर पर दावत (पार्टी) हो या बाहर पिकनिक हम स्टील के बर्तन ही इस्तेमाल करते थे, लेकिन आज कल इनकी जगह प्लास्टिक या थर्माकोल के बर्तनों ने ले ली है। इसकी वजह से हम वातावरण को बहुत दूषित कर रहे हैं। आज ओड़िशा में साल के पत्तों से थालियाँ (प्लेट) और कटोरियाँ (बाउल) बनाई जाती हैं। इसके लिए सुबह जल्दी उठ कर आदिवासी औरतें जंगल में जाकर साल के पत्ते तोड़ कर लाती हैं। इन्हें घर लाकर मिट्टी की ज़मीन पर सुखाया जाता है। फिर उन्हें एक के ऊपर एक रख कर सिल कर दबाया जाता है जिससे प्लेट और प्याले तैयार किए जाते हैं। आज हमने चाहे कितनी भी प्रगति कर ली हो लेकिन यही लोग हैं जो वास्तव में प्रकृति को नुकसान न पहुँचा कर उसे लोकोपयोगी बना रहे हैं। हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हमें जब भी जरूरत हो इस तरह की चीज़ों का इस्तेमाल करते हुए अपने वातावरण को स्वस्थ रखना चाहिए।

हिंदी भाषा का महत्त्व

- चंदना रानी पात्रो

हम अपने आस-पास बोली जाने वाली अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ देखते हैं। लेकिन एक भाषा जो हम सभी को जोड़े रखती है वह है हिंदी। पहले से ही शिक्षकों और शिक्षा प्रणालियों ने सभी को हिंदी में शिक्षित करने पर बहुत ज़ोर दिया है। यह हिंदी में बहुत सफल भी रहा है।

वर्तमान में विश्व स्तर पर हिंदी साहित्य की मांग बढ़ी है। हिंदी साहित्य व्यक्ति के जीवन से जुड़ा हुआ है। इसमें सुख, दुख, सहानुभूति सभी प्रकार के भाव समाहित हैं। हिंदी साहित्य मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। इस साहित्य को पढ़कर हमारे बच्चे महसूस करेंगे कि यह आपकी आँखों की दृष्टि को आपके सामने प्रकट कर रहा है।

हिंदी की ख्याति आज देश ही नहीं विदेशों में भी है। हिंदी का सरलतम रूप आज समाज में प्रचलित है। हिंदी का अध्ययन देश में ही नहीं विदेशों में भी हो रहा है। विदेश में रहने के बावजूद हमारे बच्चे हिंदी सीखने की सुविधाओं का आनंद ले रहे हैं। यह हमारी जनप्रिय भाषा - हिंदी सीखने के लिए जागरूक करता है। इन सुविधाओं और हिंदी को महत्त्व देने के लिए उठाए गए कदमों को देखकर बहुत खुशी होती है।

कौन छोटा - कौन बड़ा, कौन कितना उपयोगी ? क्या आपको है पता?

- सौम्या राजेश

एक आदमी की जेब में दो हज़ार का नोट और एक रुपए का सिक्का था। ये दोनों इकट्ठे हुए। सिक्का अन्य लोगों की तरह अलग होने वाले नोट को देखे ही जा रहा था। नोट ने पूछा, ऐसे क्या देख रहे हो भाई? सिक्कों ने जवाब दिया, आप जैसे मूल्यवान व्यक्ति से मिलने की इच्छा थी और आज सपना पूरा हो गया तो खुशी से फूला नहीं समा रहा हूँ। मगर अब तक आप कितना घूम चुके होंगे ना ? मुझसे तो आपका मूल्य दो हज़ार गुणा ज्यादा है, तो आप कितने लोगों के काम आए होंगे ना ?

दु:खी होते हुए नोट ने जवाब दिया। तू जो सोच रहा है ऐसा कुछ भी नहीं है मेरे भाई। मैं एक बहुत बड़े उद्योगपति की गिरफ़्त में था, उनकी तिजोरी में बंद था, टैक्स चोरी के मामले में वो फँसा तो मैं बाहर निकला। मुझे लगा कि अब मुझे मुक्ति मिलेगी, लेकिन रिश्वत के रूप में मुझे अधिकारी के हाथ में रख दिया और अधिकारी ने मुझे बैंक लॉकर में डाल दिया। वहाँ तो मेरा दम ही घुट रहा था। कुछ दिन पहले वहाँ से निकल कर इस इंसान की जेब में आया हूँ और तुम्हारे साथ हूँ। सच कहूँ तो मेरा जीवन जेल में बीता है। तुम अपना हाल सुनाओ।

अरे दोस्त ! मैं क्या बताऊँ, मैं तो बहुत घूम चुका हूँ। कभी भिखारी के पास जाकर उसकी मदद की, कभी बच्चों के पास जाकर उनको चॉकलेट दिलवाई। पवित्र तीर्थ स्नान भी किया। मैं प्रभु के चरण भी छू आया हूँ। भक्त मुझे भगवान के चरणों में रख दिया करते, कभी आरती की थाली में, कभी अल्लाह की चादर पर,मैं हर जगह, सभी जगह रह चुका हूँ। यह सुनकर नोट की आँखें भर आईं।

दो हज़ार के नोट ने मुसकुराते हुए कहा, "हम कितने बड़े हैं, इससे ज़्यादा जरूरी है कि हम कितने उपयोगी हैं। बड़े हैं और उपयोगी नहीं तो क्या जीवन। लेकिन छोटे हैं और उपयोगी भी तो वही सही मायने में बड़ा है।"

परिश्रम ही सफलता की कुंजी

- हेतल पटेल

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ।।

अर्थ:- इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन उसका आलस्य होता है और सबसे बड़ा मित्र परिश्रम ही होता है, क्योंकि परिश्रमी व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता।

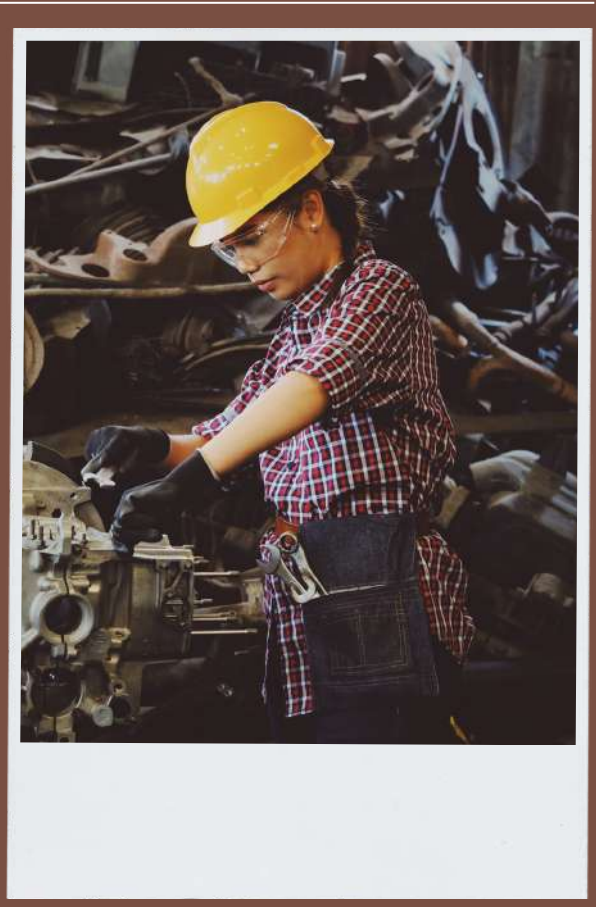

- किसी भी व्यक्ति के जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह पूरी स्वायत्तता और कड़ी मेहनत के साथ अपने कार्य को करने की इच्छा रखता है कि नहीं। यही परिश्रम व्यक्ति की अंतिम नियति और सफलता तय करेगा।
- परिश्रम ही सफलता की नींव है। कठिन परिश्रम केवल एक शारीरिक प्रयास नहीं है, बल्कि इसके लिए मानसिक और भावनात्मक प्रतिबद्धता की भी आवश्यकता होती है।
- सबसे पहले परिश्रम महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्तियों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करता है। बिना मेहनत के सफलता मिलना मुश्किल है।
- जब हम कड़ी मेहनत करते हैं, तो हम अपने चुने हुए क्षेत्र में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और अनुभव प्राप्त करते हैं।
- परिश्रम से मिलने वाला अनुशासन और समर्पण भी व्यक्तियों में गर्व और उपलब्धि की भावना पैदा करता है, जिससे व्यक्ति में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की भावना निर्मित होती है।

जब हम परिश्रम करते हैं, तो हम अपने कौशल और क्षमताओं को विकसित करने में सक्षम होते हैं और इससे सफलता के नए रास्ते खुलते हैं। यह एक मजबूत कार्य, नैतिकता का निर्माण करने में भी मदद करता है जो कि किसी भी पेशे में अत्यधिक मूल्यवान है।

- सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम जरूरी है। यह वह नींव है जिस पर महान उपलब्धियाँ निर्मित होती हैं।
- आज के विद्यार्थी हमारे भविष्य का आधार हैं और उनकी सफलता उनकी कड़ी मेहनत से परिभाषित होगी।
- यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि एक छात्र अपने जीवन में समर्पण, सकारात्मक दृष्टिकोण और कड़ी मेहनत से जो चाहे हासिल कर सकता है।
- जब सफलता प्राप्त करने की बात आती है, तो कठिन परिश्रम करने के अलावा मन में और कोई विचार नहीं आना चाहिए ।
- सभी सफल खेल हस्तियों, कलाकारों और लेखकों ने प्रसिद्धि या वांछित फल प्राप्त किया है क्योंकि उन्होंने इसके बारे में सपना देखने के अलावा पहले दिन से ही कड़ी मेहनत करना शुरू कर दिया था।

• परिश्रम ही सफलता की कुंजी है, शायद यह दुनिया का सबसे प्रसिद्ध उद्धरण है, लेकिन कई बार परिश्रम भाग्य की छाया में अपनी महत्ता खो देता है। हर किसी को ध्यान देना चाहिए कि भाग्य मेहनत से तय होता है। जैसे पानी भी पत्थर को काट सकता है, वैसे ही व्यक्ति अपने जीवन में कड़ी मेहनत से कुछ भी हासिल कर सकता है।

अंत में, महान फुटबॉल खिलाड़ी 'पेले' का एक वाक्य याद आता है कि सफलता कोई दुर्घटना नहीं है। यह कड़ी मेहनत, दृढ़ता, गहन अध्ययन, त्याग और समर्पण से मिलती है।

गुरूपदेश

नई सोच के साथ, हमें अब चलना है

– मुईनुद्दीन हाश्मी

मज़हब की दीवारों में, इंसान को न तुम कैद करो,
न टकराओ आपस में, न आपस में कोई बैर रखो।
मैं इंसान हूँ, तुम इंसान हो, और भी हैं इंसान यहाँ,
एक-दूजे के गले लगो, जात-पात एक ओर रखो।
न बाँटो हिन्दू-मुस्लिम में, तुम हिंदी और उर्दू को,
तुम्हारी ज़बाँ में मैं बात करूँ, तुम मेरी ज़बाँ में बात करो।
याद करो वो आज़ादी का किस्सा जब हम साथ लड़े,
भगा दिया अंग्रेजों को भी, जब थे हम सब साथ खड़े,
आज अगर तुम आपस में ही, फिरकों में बंट जाओगे,
याद रखो दिन दूर नहीं जब फिर ग़ुलाम बन जाओगे।
हम नई नस्ल हैं;
हम नई नस्ल हैं,
नई सोच के साथ, हमें अब चलना है,
एक-दूजे से द्वेष नहीं, बस प्रेम हमें अब करना है।

– अंकिता रंजीत शेरे

माँ

– डॉ गीता भट्ट

दुनिया का सर्वोपरि उपहार मेरे माता – पिता हैं। आज मैं जहाँ भी हूँ, जो भी हूँ सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने माता – पिता की वजह से हूँ। एक माँ का कर्तव्य अपने बच्चे के जन्म से लेकर जब तक उसकी साँसें चलती है तब तक पूर्ण नहीं होती, वह हमेशा चिंतित रहती है। आज मैं भी एक माँ हूँ अपने बच्चों को सर्वगुण संपन्न बनाने का प्रयास करती रहती हूँ। हाँ, मैं उनको प्रत्यक्ष रुप से समझाती हूँ। मुझे विदित है अगर मैं सूर्योदय से पहले बिस्तर नहीं छोडूँगी तो मेरे बच्चे भी नहीं छोड़ेंगे अगर मैं वक्त व्यर्थ गवाऊँगी तो मेरे बच्चे भी गवाएंगे। मैं बड़ों का आदर एवं सम्मान नहीं करूँगी तो जाहिर सी बात है वे भी नहीं करेंगे।

जब मैं छोटी थी तो हम संयुक्त परिवार में रहते थे, जहाँ पर बच्चे का पालन – पोषण एवं विकास में किसी भी प्रकार की खामियाँ – कमियाँ नहीं होती थी। मुझे अपनी दादी से बहुत लगाव था। वह हमेशा मुझे आशीर्वाद देती थी जो आज भी मेरे दिलो–दिमाग में विद्यमान है कि बड़ों के आशीर्वाद से हम सब – कुछ पा सकते हैं, अर्थात बच्चों को बार–बार कहने से उनमें गुण विकसित नहीं होंगे, बल्कि जब वे हमें देखते हैं तो स्वयं ही ग्रहण करते हैं। जैसे मैंने कई बार लोगों को बच्चों से बोलते हुए सुना एवं देखा है कि आप पाश्चात्य संस्कृति अपना रहे हो, मैं उन लोगों से पूछना चाहती हूँ कि क्या आपने कभी उनको दिखाया है कि अपनी संस्कृति क्या होती है ? कहने मात्र से कुछ हासिल नहीं होता है, हमें वह करके दिखाने की भी जरूरत है। फिर ख़ुद–ब– ख़ुद वह संस्कार विकसित होंगे।

ये सब सिखाती हैं केवल 'माँ'। जब हम खुश होते हैं तो शायद माँ को याद नहीं करते लेकिन जब परेशान होते हैं, तो माँ सबसे पहले याद आती है क्योंकि वह हमारा कष्ट हरती हैं। अंत में सिर्फ़ इतना ही लिखना चाहती हूँ कि

माँ – बाप ऐसे होते हैं दोस्तों, जो जिंदगी में फिर नहीं मिलते,
खुश रखा करो उनको, फिर देखो जन्नत कहाँ नहीं मिलती।

मेरी और दुनिया की समस्त माँ को शत–शत प्रणाम !!

समय का महत्त्व

- हेमलता गौड़

किसी ने ठीक कहा है –" समय तथा लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं। " इस संसार में सबसे अमूल्य वस्तु है –'समय'। जो इसे नष्ट करता है ,वह स्वयं नष्ट हो जाता है। इस संसार में सभी चीज़ों को घटाया –बढ़ाया जा सकता है पर समय को नहीं। समय किसी के अधीन नहीं रहता। ना वह रुकता ,ना ही वह किसी की प्रतीक्षा करता है। मानव के लिए सबसे बड़ा वरदान समय ही है। कबीर के अनुसार जो लोग दिन खाने –पीने में तथा रात सोकर गुज़ार देते हैं ,वे अपने हीरे जैसे अमूल्य जीवन को कौड़ी के बदले बेच देते हैं। ऐसे लोगों को उस समय पछताना पड़ता है जब समय उनके हाथ से निकल जाता है। उस समय वे हाथ मलते रहते हैं तथा पश्चाताप के कड़वे फल उन्हें चखने पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में यही कहावत ठीक बैठती है –'अब पछताए होत का ,जब चिड़िया चुग गई खेत। '

समय अमूल्य धन है। समय की दुनिया में अमीर – गरीब ,ऊँच – नीच का भेदभाव नहीं है। इतिहास साक्षी है कि जिसने भी समय के महत्त्व को पहचाना तथा उसका सदुपयोग किया, वह उन्नति की सीढ़ियों पर चढ़ता गया और जिसने समय का तिरस्कार किया, समय ने उसे बर्बाद कर दिया। ईश्वर हमें एक बार में एक क्षण देता है तथा दूसरा क्षण देने से पूर्व पहले क्षण को ले लेता है।

विद्यार्थी – जीवन में समय का अत्यधिक महत्त्व है। समय का सदुपयोग करने वाला विद्यार्थी भावी जीवन में सफल होता है तथा एक ईमानदार नागरिक बनता है। इसके विपरीत, समय को व्यर्थ की बातों में गँवाने वाला छात्र असफलता का मुँह देखता है।

समय का सदुपयोग केवल कर्मठ तथा उद्यमी व्यक्ति ही कर सकता है, आलसी नहीं। आलस्य ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।

विद्यार्थी को इस शत्रु से सावधान रहना चाहिए। यही शत्रु समय बर्बाद करता है। विद्यार्थी को अपने एक – एक क्षण के उपयोग के प्रति सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इसके लिए अच्छे लोगों की संगति भी आवश्यक है। सत्संगति के कारण व्यक्ति अपने समय को व्यर्थ की बातों में नहीं गँवाता।

समय एक ऐसा देवता है जो प्रसन्न होने पर यदि नेपोलियन तथा सिकंदर जैसा बना देता है, तो कुपित होने पर समूल नाश कर देता है। विद्यार्थी को अपना समय आमोद – प्रमोद, फैशन तथा अनावश्यक बातों में नहीं खोना चाहिए, अपितु अध्यवसायी बनकर ज्ञानार्जन के पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। समय का सदुपयोग भाग्य – निर्माण की आधारशिला है। समय के महत्त्व को न समझने वाले वास्तव में अभागे हैं। औरंगज़ेब ने इसलिए अपने वसीयतनामे में लिखा है –"जो व्यक्ति एक पल भी गफ़लत में गँवा देता है वह सारी उम्र पछताता है। "

गतिविधियों में हम

हिंदी दिवस

जन – जन की भाषा, मन की भाषा और एक सूत्र में पिरोकर अपनेपन की भाषा के रूप में भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी द्वारा 14 सितंबर 'हिंदी दिवस' के अवसर पर विशेष प्रार्थना सभा और रेडियो कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य समेत अन्य मेहमानों ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विद्यार्थियों ने भाषण, गीत और रेडियो कार्यक्रम के द्वारा हिंदी के महत्त्व की जानकारी प्रदान की। सभी ने यह संकल्प लिया कि हिंदी को अपनाकर हिंदी के साथ अन्य भाषाओं को भी बराबरी का दर्जा देकर अधिक से अधिक भाषा सीखकर विद्यार्थी स्व-विकास और वैश्विक नागरिक निर्माण के संकल्प को पूरा करेंगे।

हिंदी वाद – विवाद प्रतियोगिता

विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति की कला के निखार हेतु भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के हिंदी विभाग अंतर्गत स्पंदन क्लब द्वारा कक्षा 9 वीं के विद्यार्थियों के लिए वाद – विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय 'सामाजिक अपराधों की बढ़ोत्तरी के लिए सोशल मीडिया जिम्मेदार है' रखा गया था। दिए गए विषय पर कुल 20 प्रतिस्पर्धियों ने पक्ष और विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए। विद्यार्थियों ने सोशल मीडिया के उपयोग और दुरुपयोग को परिभाषित करते हुए कहा कि इसके नियंत्रण की जिम्मेदारी हमारे हाथों में है।

प्रतियोगिता के परिणामस्वरूप प्रथम स्थान आयुष बिसोई, द्वितीय स्थान वियाना लोबो और तृतीय स्थान अस्मि देशमुख ने प्राप्त किया।
प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में विभाग प्रमुख रवि शुक्ला, हेमलता गौड़ और मुईनुद्दीन हाश्मी उपस्थित रहे। इस अवसर पर हेमलता गौड़ व मुईनुद्दीन हाश्मी ने वक्तृत्व कला के गुण और एक अच्छा श्रोता बनने की सीख प्रदान की।

PIES TALK SHOW

कोविड महामारी के समय हर किसी ने इस बात का एहसास किया कि आपदा में अवसर की तलाश की जा सकती है। एक क्लिक पर दुनिया से जुड़ जाने की कला इसी आपदा के दौर में सीखा है। इसी को आगे बढ़ाते हुए भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के हिंदी विभाग द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से चिंतन क्षमता के विकास और अभिव्यक्ति को अवसर देने हेतु अंग्रेजी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'PIES TALK SHOW' मासिक कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इसके सफलतापूर्वक 5 एपिसोड हो चुके हैं और इसमें भारत और न्यूजीलैंड के विशिष्ट व्यक्तित्व उपस्थित रहकर भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर चुके हैं।

एपिसोड - 1

इस कार्यक्रम का उद्घाटन पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरेश प्रभु के हस्ते संपन्न हुआ। पहले एपिसोड में विशेष अतिथि व वक्ता के रूप में मेजर जनरल (सेनि) राजन कोचर उपस्थित रहे, जिन्होंने विद्यार्थियों के साथ अपना अनुभव साझा करते हुए उनके प्रश्नों के उत्तर देकर मार्गदर्शन किया। मेजर राजन कोचर ने इस प्रयास की सराहना की और कहा कि ऐसे कार्यक्रम वर्तमान समय की जरूरत बन गए हैं।

एपिसोड - 2

PIES TALK SHOW के दूसरे एपिसोड में डॉ वेदप्रकाश मिश्रा उपस्थित रहे। डॉ मिश्रा मेडिकल कौंसिल ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष रह चुके हैं। भारत के कई मेडिकल विश्वविद्यालयों में डॉ मिश्रा प्रमुख पदों पर कार्यरत हैं। डॉ मिश्रा के साथ विद्यार्थियों ने 'नई शिक्षा नीति 2020 - संभावनाएँ और चुनौतियाँ' विषय पर चर्चा करते हुए शिक्षा के भावी परिवर्तनों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

एपिसोड - 3

PIES TALK SHOW के तीसरे एपिसोड में न्यूजीलैंड संसद के पहले भारतीय सांसद कँवलजीत सिंह बक्शी उपस्थित रहे। कँवलजीत सिंह बक्शी ने इस कार्यक्रम से जुड़कर विद्यालय की सराहना करते हुए विद्यार्थियों के प्रश्नों और उनके शोध की भूरि – भूरि प्रशंसा की। विद्यार्थियों ने कँवलजीत सिंह बक्शी से 'भारत की सॉफ्ट-पावर नीति' विषय पर बातचीत करते हुए भारत की वैश्विक नीतियों पर चर्चा की। वैश्विक स्तर पर भारत की राजनीतिक नीतियों और उसके प्रभाव पर पूर्व सांसद बक्शी ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

एपिसोड - 4

PIES TALK SHOW के चौथे एपिसोड में युवा आईपीएस अधिकारी आनंद मिश्रा उपस्थित रहे। जिन्होंने कानून और व्यवस्था के बदलते परिवेश पर खुलकर विद्यार्थियों से बातचीत किया। विद्यार्थियों ने भारतीय परिपेक्ष्य के साथ ही वैश्विक व्यवस्था पर आधारित प्रश्नों से आनंद मिश्रा को प्रभावित करते हुए अपनी चिंतन क्षमता से परिचित करवाया। आनंद मिश्रा से विद्यार्थियों ने 'कानून के बदलाव और उसके क्रियान्वयन की समस्याएँ विषय पर गंभीर चर्चा की।

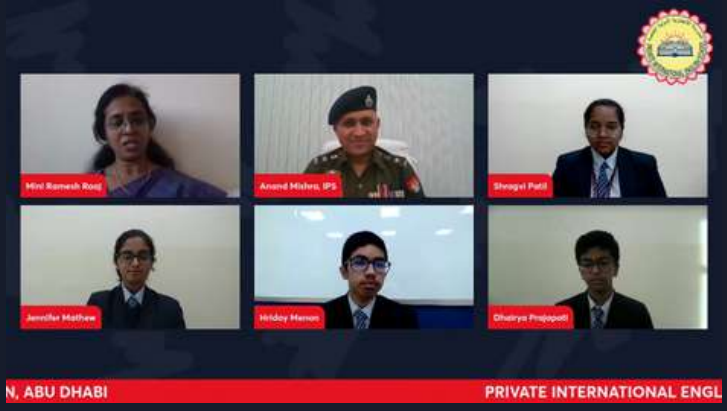

एपिसोड - 5

PIES TALK SHOW के पाँचवे एपिसोड में एयर मार्शल (सेनि) गुरचरण सिंह बेदी उपस्थित रहे। इस सत्र में विद्यार्थियों ने भारतीय वायुसेना के भिन्न पहलुओं पर चर्चा की। एयर मार्शल बेदी ने अपने अनुभव को विद्यार्थियों के साथ साझा किया। 'भारतीय वायुसेना की वैश्विक संभावनाओं' से विद्यार्थियों को परिचित करवाते हुए बेदी ने आश्वासित किया कि भारतीय वायुसेना का परचम सदैव आसमान में लहराता रहेगा।

SDG
सतत विकास लक्ष्य

'बचे हुए भोजन का सदुपयोग ज़रूरतमंद लोगों के लिए करें' यह संदेश कक्षा 4 के विद्यार्थियों ने विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों को दिया। कक्षा - 4 के नन्हें छात्रों ने 'सतत विकास लक्ष्य' की प्राप्ति के लिए प्रार्थना सभा के दौरान यह प्रण लिया कि वह उतना ही भोजन अपनी थाली में लेंगे, जितना ग्रहण कर सकें ताकि भोजन की बर्बादी को रोका जा सके और उस भोजन द्वारा ज़रूरतमंदों का पेट भरकर उनके चेहरों पर मुस्कान लाई जा सके।

विश्व में 'गरीबी मुक्त समाज' हेतु भोजन के महत्त्व को समझना बहुत अनिवार्य है। अतः भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के हिंदी विभाग द्वारा कक्षा 6 से 9 के विद्यार्थियों के लिए भोजन की बर्बादी को रोकने व जागरूकता हेतु पदयात्रा निकाली गई। जिसमें कक्षा 8 और 9 के विद्यार्थियों ने सभी को भोजन के महत्त्व से अवगत करवाया। इस पदयात्रा में विद्यार्थियों ने जागरूकतापूर्ण घोषवाक्य व पथनाट्य के माध्यम से सभी को संदेश देकर विभाग के उद्देश्य को पूर्ण किया।

विश्व मातृभाषा दिवस

विश्व मातृभाषा दिवस के अवसर पर भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के विद्यार्थियों द्वारा विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अपनी – अपनी मातृभाषाओं में कार्यक्रम संचालन, पुस्तक समीक्षा, समाचार वाचन और भिन्न भाषाई विविधता जैसे कार्यक्रम से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश देकर सभी भाषाओं के सम्मान की सीख प्रदान की। इस आयोजन में कुल 13 भारतीय मातृभाषाओं की प्रस्तुति दी गई।

साथ ही विद्यालय के विद्यार्थियों ने अपनी – अपनी मातृभाषा में 'शुभकामना पत्र' तैयार करके अपने मित्र को देते हुए भाषाई संस्कृति का आदान – प्रदान किया।

नवांकुर – विश्व हिंदी दिवस समारोह 2023

प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल, अबु धाबी की ओर से 'विश्व हिंदी दिवस 2023' के अवसर पर 'नवांकुर हिंदी समारोह' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कुरान पाठ और दीप प्रज्ज्वलन के माध्यम से प्रमुख अतिथियों के हस्ते संपन्न हुआ।

इस समारोह द्वारा विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए भिन्न कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ प्रदान की। विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से हिंदी के वैश्विक स्वरूप और उसकी स्वीकार्यता पर बल दिया।

कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों द्वारा 'वर्णमाला फैशन शो' के माध्यम से वर्ण से बनने वाले शब्द और उसकी जानकारी प्रस्तुत की गई। कक्षा 3 और 4 के विद्यार्थियों द्वारा 'प्रदर्शन और प्रस्तुति' के माध्यम से किसी एक वस्तु को दिखाकर हमारे जीवन में उसके महत्त्व की जानकारी प्रस्तुत की गई। कक्षा 5 और 6 के विद्यार्थियों ने विज्ञापन प्रस्तुतीकरण के माध्यम 'लैपटॉप' और 'स्कूल बैग' के विज्ञापन को अभिनय के माध्यम से अनोखे अंदाज़ में प्रस्तुत किया। कक्षा 7 की छात्राओं द्वारा 'उत्तराखंडी लोकनृत्य' की मनमोहक प्रस्तुति दी गई। कक्षा 8 के छात्र – छात्राओं ने संत रहीमदास के नीतिपरक नैतिक दोहों का पाठ करते हुए जीवन में नैतिक मूल्यों के महत्त्व का प्रदर्शन किया। कक्षा 4 के अंश नरेंद्र प्रजापति ने 'विश्व हिंदी दिवस' पर जानकारी प्रदान करते हुए आत्मविश्वास के साथ अपने विचार प्रस्तुत किए।

समारोह की प्रस्तावना के माध्यम से विभाग प्रमुख (प्राथमिक) इंदु ने 'विश्व हिंदी दिवस' की सारगर्भित जानकारी प्रदान की। इस समारोह का कुशल संचालन विद्यालय की छात्राओं द्वारा किया गया, जिसमें हेतवी पटेल, कीर्तना नायर, इरा वर्मा और अद्वैता श्रीजीत शामिल रहीं। कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन हिंदी विभाग की शिक्षिका मंजू मैथ्यू ने किया।

इस आयोजन की सफलता हेतु विद्यालय के प्रधानाचार्य सुरेश वी. बालकृष्णन ने अपनी शुभकामनाएँ प्रदान की। इस अवसर पर उप – प्रधानाचार्या मिनी रमेश, सहायक उप – प्रधानाचार्या जनारजनी, प्रधानाध्यापिका वनिता वॉल्टर ने विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के शैक्षिक व सामाजिक महत्त्व से अवगत करवाया।
इस आयोजन में विशेष रूप से विद्यालय की उप – प्रधानाचार्या पद्मजा मेनन, मिनी रमेश, सहायक उप – प्रधानाचार्या जनारजनी, शालिनी शोभा, प्रधानाध्यापिका वनिता वॉल्टर, हिंदी विभाग प्रमुख रवि शुक्ला, हिंदी विभाग प्रमुख (प्राथमिक) इंदु, अन्य विभागों के विभाग प्रमुख, पर्यवेक्षकगण भी उपस्थिति रहे।

समारोह को सफल बनाने हेतु हिंदी विभाग की हेमलता गौड़, डॉ गीता भट्ट, राजी के.एम., मंजू मैथ्यू, डिम्पी डागर, मुईनुद्दीन हाश्मी, नुसरत फातिमा ने अपना कीमती योगदान दिया।
इसी क्रम में भारतीय विद्या भवन मिडिल ईस्ट के समस्त 8 विद्यालयों की सामूहिक प्रार्थना सभा भी आयोजित की गई। जिसमें भारतीय विद्या भवन मिडिल ईस्ट के कुल 8 विद्यालयों के विद्यार्थियों ने नाटक, कविता, गीत आदि की प्रस्तुति के माध्यम से अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया और विश्व हिंदी दिवस 2023 के इस समारोह को सफल बनाया।

पत्तों से कलाकारी

'पत्तों के खेल' कविता पढ़ने के पश्चात कक्षा – 4 के विद्यार्थियों को पुराने समय में पत्तों द्वारा खेले जाने वाले खेलों की जानकारी प्राप्त हुई। कक्षा – 4 के शिक्षकों द्वारा हिंदी कक्षा को और रुचिपूर्ण बनाने के लिए पत्तों से कलाकारी (कला एकीकृत गतिविधि) का आयोजन किया । गतिविधि के दौरान विद्यार्थियों नें पत्तों द्वारा विभिन्न प्रकार के पशु – पक्षियों की आकृतियाँ बनाई।

तुलसीदास क्लब

अंतर विद्यालय दोहा गायन व रचनात्मक एकालाप प्रतियोगिता

भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी की तरफ से भारतीय विद्या भवन मिडिल ईस्ट अंतर्गत तुलसीदास क्लब द्वारा 'अंतर विद्यालय दोहा गायन व रचनात्मक एकालाप प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य परक दोहों से जीवन मूल्य प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता का विकास करना था। इस आयोजन में कार्यक्रम उद्घाटक व अध्यक्ष डॉ संजय भारद्वाज, कवि, लेखक, पुणे महाराष्ट्र से उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में ज्योत्सना शर्मा, भाषा विशेषज्ञ व लेखिका, महाराष्ट्र, पंडित गौरव गौतम, अभिनेता, उद्घोषक, फिल्म निर्देशक, भोपाल और सत्यम सम्राट आचार्य, सह – प्राध्यापक, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, इंदौर से उपस्थित रहे। सभी ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया और प्रस्तुति के गुण सिखाए।

इस प्रतियोगिता में भारतीय विद्या भवन मिडिल ईस्ट के कुल 8 विद्यालयों के 40 विद्यार्थियों ने सहभाग किया।

दोहा गायन प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे –

प्रथम पुरस्कार – विस्मिता राजेश अय्यर, पहल पूजाबेन महेता, उत्कर्ष कार्तिक, बहरीन इंडियन स्कूल, बहरीन
द्वितीय पुरस्कार – श्रेयांश अवस्थी, फिफ़िन मैंथ्यु बिनु, राशिका सैंथिल कुमार, इंडियन एजुकेशनल स्कूल, कुवैत
तृतीय पुरस्कार – स्मृति अभिजीत, जोअन मारिया सीबी, प्राणव श्रीराम, स्मार्ट इंडियन स्कूल, कुवैत

रचनात्मक एकालाप प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे –

प्रथम पुरस्कार – सानवी संदीपकुमार मरसोनिया, इंडियन एजुकेशनल स्कूल, कुवैत
द्वितीय पुरस्कार – गार्गी कंडीकाटला, बहरीन इंडियन स्कूल, बहरीन
तृतीय पुरस्कार – शिज़ा फातिमा, स्मार्ट इंडियन स्कूल, कुवैत को

प्रतियोगिता का कुशल संचालन विद्यार्थियों में रुमेसा, अनविथा, आयुष, साकिब द्वारा किया गया।

अंतर विद्यालय वक्तृत्व प्रतियोगिता

भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी की तरफ से भारतीय विद्या भवन मिडिल ईस्ट अंतर्गत तुलसीदास क्लब द्वारा 'अंतर विद्यालय वक्तृत्व प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में वक्तृत्व कला का निखार लाना था। इस प्रतियोगिता के उद्घाटक व कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में सुधाकर पाठक, पूर्व सदस्य हिंदी अकादमी नई दिल्ली व संस्थापक, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी नई दिल्ली से उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में डॉ श्रीश पाठक, सह - आचार्य, एमेटी विश्वविद्यालय, नोएडा, डॉ लोकेन्द्र सिंह, सह - आचार्य, माखनलाल पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल और प्रतिश्रुति सिंह अग्रवाल, सहायक प्राध्यापक, रामदेव बाबा इंजीनियरिंग कॉलेज, नागपुर की उपस्थिति रही।

इस प्रतियोगिता में भारतीय विद्या भवन मिडिल ईस्ट के कुल 8 विद्यालयों के 24 विद्यार्थियों ने सहभाग किया।
विजेताओं में -

प्रथम पुरस्कार – माहिका चावला, बहरीन इंडियन स्कूल, बहरीन
द्वितीय पुरस्कार – आमिना पालेकर, इंडियन एजुकेशनल स्कूल, कुवैत
परिना ढोलकीया, बहरीन इंडियन स्कूल, बहरीन
तृतीय पुरस्कार – अरहम जैन, भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी
अभिज्ञान गुप्ता, इंडियन एजुकेशनल स्कूल, कुवैत

प्रतियोगिता का कुशल संचालन विद्यार्थियों में रुमेसा, ज़ारा, अनविथा, मुन्ताहा, जगन्नाथ, आयुष और साकिब द्वारा किया गया।

अंतर विद्यालय हास्य – व्यंग्य काव्य पाठ प्रतियोगिता

भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी की तरफ से भारतीय विद्या भवन मिडिल ईस्ट अंतर्गत तुलसीदास क्लब द्वारा 'अंतर विद्यालय हास्य – व्यंग्य काव्य पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों में कविताओं की रुचि व साहित्य के प्रति करीब लाना था। इस आयोजन में कार्यक्रम उद्घाटक व अध्यक्ष डॉ लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, उप – महानिदेशक (सेनि), आकाशवाणी, नई दिल्ली से उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में डॉ नूतन शर्मा, कवयित्री व लेखिका, हिंदी विभाग प्रमुख, कसिगा स्कूल, देहरादून और डॉ आरती लोकेश गोयल, कवयित्री, लेखिका, प्रशासनिक प्रमुख, न्यू दिल्ली पब्लिक स्कूल, शारजाह, संयुक्त अरब अमीरात से उपस्थित रहीं। सभी ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया और कविता की बारीकियों से अवगत करवाया।

इस प्रतियोगिता में भारतीय विद्या भवन मिडिल ईस्ट के कुल 8 विद्यालयों के 16 विद्यार्थियों ने सहभाग किया।

बाल कवि विजेताओं में –

प्रथम पुरस्कार – ऋषभ शर्मा, बहरीन इंडियन स्कूल, बहरीन
स्वारा गड़करी, स्मार्ट इंडियन स्कूल, कुवैत
द्वितीय पुरस्कार – नंदिनी भाटारा, अल साद इंडियन स्कूल, अल ऐन,
रिया गोंसालवेस, इंडियन एजुकेशनल स्कूल, कुवैत
सलोनी पाटिल, प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल, अबु धाबी
तृतीय पुरस्कार – वीर पाटिल, प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल, अबु धाबी

इस प्रतियोगिता में भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के प्रधानाचार्य सुरेश बालकृष्णन समेत विद्यालय प्रबंधन समिति के अन्य सदस्यगण उपस्थित रहे। इस अवसर पर विभाग प्रमुख रवि शुक्ला, विभाग प्रमुख (प्राथमिक) इंदु, डॉ गीता भट्ट, हेमलता गौड़, नुसरत फातिमा, मुईनुद्दीन हाश्मी, राजी के. एम., मंजू मैथ्यू, डिम्पी डागर ने सहकार्य किया।

प्रतियोगिता का कुशल संचालन विद्यार्थियों में आस्मा, कृपा, गौरांगी और नमिराह द्वारा किया गया।

उपलब्धियाँ

भारतीय दूतावास अबु धाबी में अमोघ और हेतवी ने जीत हासिल की

हिंदी दिवस 2022 के उपलक्ष्य में संयुक्त अरब अमीरात के भारतीय दूतावास, अबु धाबी द्वारा आयोजित अंतर विद्यालय हिंदी निबंध और काव्य पाठ प्रतियोगिता में भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के विद्यार्थियों ने सहभाग किया। जिसमें निबंध प्रतियोगिता में कक्षा 8 वीं से अमोघ राजेश कौशिक को प्रथम और हेतवी पटेल को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार स्वरूप नगद राशि और प्रशंसा प्रमाणपत्र विद्यार्थियों को प्राप्त हुए।

जेम्स यूनाइटेड इंडियन स्कूल में भवनस् का परचम लहराया

जेम्स यूनाइटेड इंडियन स्कूल, अबु धाबी द्वारा अंतर विद्यालय 'छठवाँ हिंदी प्रतिभा संगम 2022' का आयोजन किया गया। जिस आयोजन में प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल के विद्यार्थियों ने खेल के द्वारा सीखो भाषा, विज्ञापन लेखन और कविता लेखन प्रतियोगिताओं में सहभाग करते हुए अपना परचम लहराया। कक्षा 9 वीं की अस्मि देशमुख को 'विज्ञापन लेखन प्रतियोगिता' में 'व्यक्तिगत द्वितीय पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

सभी प्रतियोगिताओं में अधिकतम अंक प्राप्त होने के कारण प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल को '**चल वैजयंती**' (रोलिंग ट्रॉफी) प्राप्त हुई।

विद्यार्थियों का सहभाग इस प्रकार रहा :

खेल के द्वारा सीखो भाषा प्रतियोगिता : आयुष बिसाई, साकिब मंज़र
विज्ञापन लेखन प्रतियोगिता : अस्मि देशमुख, वियाना लोबो
कविता लेखन प्रतियोगिता : रुमेसा शेख, अद्विका कुलदीप

काव्य प्रतियोगिता में मन्नत और आरुष की सफलता

स्मार्ट इंडियन स्कूल, कुवैत द्वारा हिंदी काव्य पाठ 'पोएटिका' का आयोजन किया गया। जिसमें भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित करते हुए प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त किया। कक्षा 1 और 2 के वर्ग में कुमारी मन्नत कौशल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कक्षा 7 और 8 के वर्ग में आरुष सुनील कुमार ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

Bharatiya Vidya Bhavan
हिंदी पोयटिका भवन्स इंटरस्कूल कविता वाचन प्रतियोगिता
२०२२-२३
प्रमाण पत्र
यह प्रमाणित किया जाता है कि प्राइवेट इंटरनेशनल इण्डिया स्कूल का छात्र कुमार आरुष सुनील कुमार ने ४ जून २०२२ को 'स्मार्ट इंडियन स्कूल, कुवैत' द्वारा आयोजित ऑनलाइन 'हिंदी पोयटिका भवन्स इंटरस्कूल कविता वाचन प्रतियोगिता' के क्रिनले में सोत्साह भाग लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया है।
श्री. महेश अय्यर प्राचार्य
श्री. रामचंद्रन मेनोन अध्यक्ष

Bharatiya Vidya Bhavan
हिंदी पोयटिका भवन्स इंटरस्कूल कविता वाचन प्रतियोगिता
२०२२-२३
प्रमाण पत्र
यह प्रमाणित किया जाता है कि प्राइवेट इंटरनेशनल इण्डिया स्कूल का छात्र कुमार मन्नत सनातन कौशल ने ४ जून २०२२ को 'स्मार्ट इंडियन स्कूल, कुवैत' द्वारा आयोजित ऑनलाइन 'हिंदी पोयटिका भवन्स इंटरस्कूल कविता वाचन प्रतियोगिता' के क्रिनले में सोत्साह भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया है।
श्री. महेश अय्यर प्राचार्य
श्री. रामचंद्रन मेनोन अध्यक्ष

अंतर विद्यालय प्रतियोगिताओं में चमकते भवनस् अबु धाबी के विद्यार्थी

दिनाँक 7 जनवरी 2023 को 'विश्व हिंदी दिवस 2023' के उपलक्ष्य में बहरीन इंडियन स्कूल, बहरीन की ओर से अंतर विद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के छात्रों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए निम्नलिखित पुरस्कार प्राप्त किए –

आर्या करमपुडी – प्रथम पुरस्कार – प्रदर्शन और प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता
तनीस्वेता चंद्रा – तृतीय पुरस्कार – एकल अभिनय प्रतियोगिता
अस्मि देशमुख – प्रथम पुरस्कार – विज्ञापन प्रस्तुतीकरण

हिंदी साहित्यकार

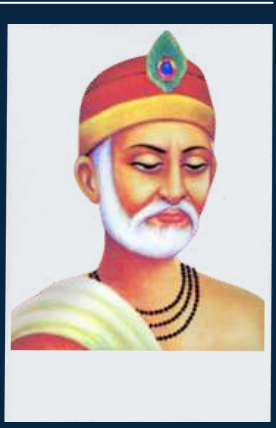

कबीरदास

संत कबीर : जीवन परिचय

संत कालीन कवियों में कबीर का स्थान 'संगम धारा के कवि के रूप में माना जा सकता है। मुगल काल को हिंदी साहित्य के इतिहास में 'भक्ति काल' के नाम से जाना जाता है। यही काल साहित्य का स्वर्णकाल भी कहलाता है। हिंदी साहित्य में भक्ति धारा के जितने भी कवि हुए-सूर, तुलसी, मीरा, कबीर तथा अन्य अनेकानेक, उन्होंने हिंदी साहित्य के कोश में मानों रत्न जड़ दिए। एक ही काल में इतने सारे कवियों का अविर्भाव किसी घटना का संयोग नहीं, बल्कि देश काल की परिस्थितियाँ रही हैं। आइए, कबीर के जीवन परिचय के बारे में कुछ लिखने से पहले देश-काल की परिस्थितियों पर विचार कर लें।

कबीर का देश-काल: जिस समय कबीर अपनी सधुक्कड़ी भाषा में पद और दोहे रच रहे थे, वह समय ऐसा था जबकि भारत भूमि पर मुगल शासक सत्ता पर अपनी पकड़ पूरी तरह से मजबूत बना चुके थे। मुगल विदेशी शासक थे उनका धर्म भारतीय सभ्यता से अलग था, खान-पान, पहनावा और भाषा अलग थी। भारतीय जनमानव मुगलों की हुकूमत को स्वीकारना अपनी मजबूरी समझ चुका था, पर उसकी धार्मिक आस्था बलवती थी। मानव स्वभाव है कि जब वह बाहरी खतरे में पड़ता है तो उसकी ईश्वरीय आस्था प्रबल हो जाती है। वह ईश्वर का स्मरण करके संकट से उबरने का प्रयास करता है। सत्ता का प्राश्रय पाकर एक ओर जहाँ मुस्लिम सभ्यता भारत में फल-फूल रही थी, वहीं हिन्दू धर्मावलम्बी इस बात के लिए सशंकित थे कि उनके धर्म, संस्कृति और आस्था पर कोई आँच न आने पाए। ऐसे समय में संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास राम भक्ति धारा का गुणगान कर, हिन्दू धर्म की आस्था की नींव को मजबूत कर रहे थे तो सूरदास कृष्ण भक्ति धारा के माध्यम से लोगों में एक नई चेतना का संचार कर रहे थे।

हिन्दू और मुसलमानों के बीच कार्य-व्यापार, मेल-मिलाप, साथ-साथ रहना एक आवश्यकता बन गयी थी। इस आवश्यकता को संगम मानकर कबीरदास ने ईश्वर को 'ब्रह्म रूप' में मानने की धारा बहाई। उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों के बीच इस बात का संदेश दिया कि ईश्वर एक है। हिन्दू का राम और मुसलमान का ख़ुदा अलग-अलग नहीं। उन्होंने ईश्वर की महिमा का जिस रूप में बखान किया, उसके लिए उनके पद पर दृष्टि डाल लेना काफ़ी है-

लाली मेरे लाल की, जित देखूं उत लाल,
लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गयी लाल।

उन्होनें ईश्वर की लालिमा (प्रकाश पुञ्ज) को हर ओर देखने की बात कहते हुए कहा कि जो ईश्वर के प्रकाश पुञ्ज को देखने गया, वह स्वयं उसका एक अंश होकर रह गया। इस तरह संत कबीरदास ने अलग-अलग धर्म की धारा को एक साथ जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने धर्म के आडंबर की निंदा की। ईश्वर को पाने के लिए गुरु की महत्ता पर जोर दिया। इन्द्रियों को वश में करके ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग बताया। यही वजह है कि उनकी संगम धारा के साथ हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्म के मानव बंधे। उनके शिष्यों में हिन्दू भी थे और मुसलमान भी उनका मत कबीर पंथ कहलाया। कबीर पंथ को मानने वालों की संख्या भारत में आज भी काफ़ी है। संत कबीर का जन्म 1455 ज्येष्ठ शुक्ल 15 को माना जाता है। उनके जन्म और मृत्यु के विषय में विद्वानों में मतभेद है। उनके जन्म के बारे में प्रचलित जनश्रुति को ही माना जाता है। कहा जाता है कि एक ब्रह्मण अपनी विधवा पुत्री को लेकर काशी में गंगा स्नान करने गया। उसने गंगा तट पर स्वामी रामानंद को देखकर उन्हें प्रणाम किया। स्वामी रामानंद ने प्रसन्न होकर ब्रह्मण विधवा पुत्री को पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया।

उनसे स्वामी रामानंद को जब इस बारे में बताया तो स्वामी जी ने कहा-
" वत्स, मैंने आशीर्वाद तो दे दिया है, यह असत्य नहीं हो सकता, किंतु इस बात का ध्यान रखना कि कन्या से होने वाला पुत्र बहुत बड़ा संत बनेगा।" बताया जाता है कि स्वामी रामानंद से आशीर्वाद प्राप्त ब्रह्मणी विधवा ने समय पूरा होने पर पुत्र को जन्म दिया। लोक-लाज के भय से वह पुत्र को लहरतारा तालाब पर कमल पुष्प पर लिटा आयी।
जिस रात विधवा ब्रह्मणी लहरतारा तालाब पर नवजात शिशु को छोड़ आयी थी, ईश्वर की इच्छा से उसी रात नीमा के स्वप्न में प्रकाश पुञ्ज दिखा और उसे ऐसा लगा कि कोई कह रहा है- "तू लहरतारा तालाब पर जा, वहाँ तुझे एक बालक मिलेगा। तू उसे पुत्र की भांति पालना।"

पत्नी की आँख खुल गई। उसने स्वप्न की बात पति को बताई। पति-पत्नी लहरतारा तालाब पर गए। कमल पुष्प पर लेटे नवजात शिशु को ले आए। उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। वे उसका लालन-पालन पुत्र के रूप में करने लगे। बालक का नाम 'कबीर' रखा।

गुरु की खोज साधु-संतों के सत्संग में उठने-बैठने से कबीर के मन में यह बात अच्छी तरह बैठ गई थी कि गुरु के बगैर ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। इस बात को उन्होंने अपने पद में वर्णन किया है-

गुरु-गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय,
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

गुरु की महत्ता को समझने के बाद वे गुरु की खोज में लग गये। उस समय स्वामी रामानंद से बढ़कर कोई दूसरा ज्ञानी गुरु न था। पर कबीर को यह भी ज्ञात था कि स्वामी रामानंद किसी मुसलमान को अपना शिष्य नहीं बनाते। इसलिए कबीर ने युक्ति निकाली एक दिन वे भोर के समय गंगा घाट की सीढ़ियों पर जाकर ऐसे मार्ग पर लेटे थे, जहाँ से स्वामी रामानंद नित्य उतरकर गंगा स्नान को जाते थे। भोर का समय होने के कारण सीढ़ियों से उतरते समय स्वामी रामानंद को सीढ़ियों पर किसी का लेटा हुआ होना दिखाई न दिया। उनका पैर कबीर की देह से छू गया। उनके मुँह से झट निकला 'राम-राम' कबीर ने झट स्वामी रामानंद का पैर पकड़ लिया। उनका 'राम-नाम' का गुरुमंत्र स्वीकार कर लिया। स्वामी रामानंद का पैर तब ही छोड़ा जब कि उन्होंने कबीर को शिष्य मानना स्वीकार कर लिया।

कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' नाम से लिखित रूप में है। बीजक के तीन भाग हैं-साखी, सबद और रमैनी साखी में दोहे, छंद, सबद पदों में संगीतात्मकता तथा रमैनी छंद में है।

कबीर की भाषा यद्यपि सधुक्कड़ी कही जाती है, पर उनमें अरबी, फारसी, ब्रज, भोजपुरी, बुन्देलखण्डी, खड़ी बोली आदि के शब्द भी मिलते हैं।

प्रेमचंद

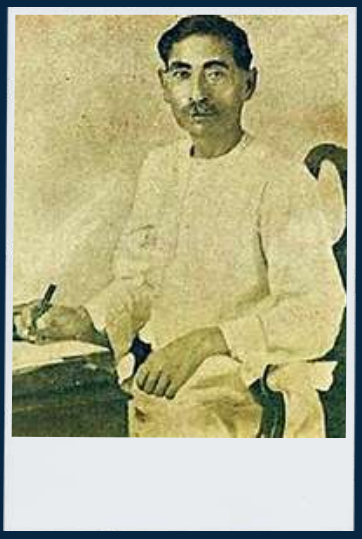

धनपत राय श्रीवास्तव (31 जुलाई 1880 - 8 अक्टूबर 1936), जिन्हें उनके कलम नाम प्रेमचंद से बेहतर जाना जाता है, एक भारतीय लेखक थे जो अपने आधुनिक हिंदुस्तानी साहित्य के लिए प्रसिद्ध थे। प्रेमचंद हिंदी और उर्दू सामाजिक कथा साहित्य के प्रणेता थे। वह भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे प्रसिद्ध लेखकों में से एक हैं और बीसवीं शताब्दी की शुरुआत के हिंदी लेखकों में से एक माने जाते हैं। उनकी कृतियों में गोदान, कर्मभूमि, गबन, मानसरोवर, ईदगाह आदि शामिल हैं।

एक उपन्यासकार, लेखक, कहानीकार और नाटककार के साथ ही उन्हें हिंदी लेखकों द्वारा "उपन्यास सम्राट" (उपन्यासकारों में सम्राट) के रूप में संदर्भित किया गया है। उनकी रचनाओं में एक दर्जन से अधिक उपन्यास, लगभग 300 लघु कथाएँ, कई निबंध और कई विदेशी साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद शामिल है।

क्या आप जानते हैं ?

वेद गुप्ते

आपके पेट में मौजूद एसिड स्टील को घोल सकता है।

घोड़े और गाय वास्तव में खड़े होकर सोते हैं।

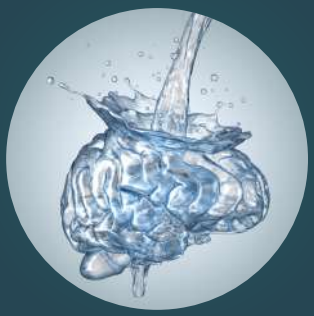

आपके दिमाग का लगभग 75% हिस्सा पानी से बना है।

अरहंत कोल्लूरू

दुनिया की अधिकांश आबादी द्विभाषी है, जिसका अर्थ है कि वे दो भाषाएँ बोलते हैं।

पृथ्वी पर सबसे शुष्क स्थान चिली का अटाकामा मरुस्थल है।

हिंदी में प्रथम

हिंदी का प्रथम महाकवि	चन्दबरदाई
हिंदी का प्रथम महाकाव्य	पृथ्वीराजरासो
हिंदी का प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता	सुमित्रानंदन पंत
हिंदी के प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता	माखनलाल चतुर्वेदी
हिंदी की पहली बोलती फिल्म	आलम आरा
प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन	1975 - नागपुर में

आपकी परख

भारतीय विद्या भवन की स्थापना किस वर्ष में हुई थी ?

भारतीय विद्या भवन की स्थापना किसकी प्रेरणा से हुई थी ?

भारतीय विद्या भवन की स्थापना किसके द्वारा की गई थी ?

भारतीय विद्या भवन अबु धाबी की स्थापना किस वर्ष में हुई ?

भारतीय विद्या भवन मिडिल ईस्ट के संस्थापक कौन हैं ?

विद्यार्थी प्रमुख का चयन सत्र 2022 - 23 में किस पद्धति से किया गया था ?

श्री सुरेश बालकृष्णन ने किस वर्ष में प्रधानाचार्य का पदभार संभाला ?

आपके विद्यालय में इमारतों के नाम किस आधार पर रखे गए हैं ?

सेल्फ़ी कोना

किसी एक विषय पर 'अपनी सेल्फ़ी' लगाकर अपने हिंदी शिक्षक को जमा कीजिए।

1. 'मेरा परिवार, मेरा अभिमान'
2. मैं और मेरा प्रिय पशु / पक्षी
3. मेरी साइकिल, मेरी हमसफ़र

लिखो और जीतो

अपनी किसी अविस्मरणीय यात्रा का सजीव वर्णन करते हुए दी गई श्रेणियों के अनुसार 'यात्रा वृतांत' लिखिए। उत्कृष्ट यात्रा वृतांत को जून 2023 के अंक में प्रकाशित किया जाएगा। साथ ही उत्कृष्ट प्रथम, द्वितीय और तृतीय यात्रा वृतांत को **विशेष पुरस्कार** दिया जाएगा।

श्रेणी 1 (कक्षा 4 से 6) – 200 शब्द मर्यादा
श्रेणी 2 (कक्षा 7 से 12) – 500 शब्द मर्यादा

भेजने का पता: editor.pratyush@bhavansabudhabi.com **अंतिम तिथि:** 15 मई, 2023

DISTRIBUTION

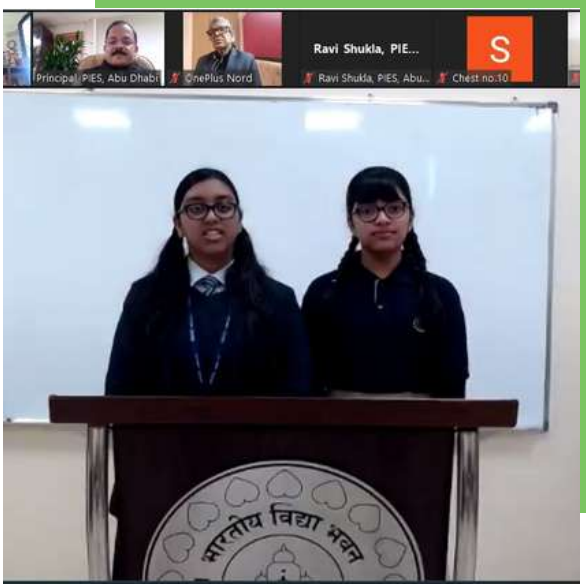
Ravi Shukla, PIE...
Principal, PIES, Abu Dhabi
OnePlus Nord
Ravi Shukla, PIES, Abu...
Chest no.10
भारतीय विद्या भवन

हिंदी विभाग

प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल, अबु धाबी

भारतीय विद्या भवन, मिडिल ईस्ट